

9/8/16

UNIT - I

classmate
Date _____
Page 1

1) Introduction of Education ⇒ प्राचीन काल में शिक्षा व अभिप्राय आत्म ज्ञान तथा आत्म प्रकाश के आवन के रूप में लिया जाता था। प्राचीन यूनान में व्यक्ति को राजनैतिक, शारीरिक मानसिक एवं नैतिक सौंदर्य के लिए शिक्षा प्रदान की जाती थी। प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य मात्र वीर सैनिक उत्पन्न करना था यह शिक्षा का संकुचित अर्थ है।

आधुनिक समय में शिक्षा को अतिशील माना गया है तथा इसे आजीवन चलने वाली प्रक्रिया कहा गया है जो कि शिक्षा का व्यापकता अर्थ है।

Meaning of Education ⇒ शिक्षा को अंग्रेजी में Education कहते हैं। विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार Education शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Educatum शब्द से हुई है। Educatum शब्द की रचना दो शब्दों से मिलकर हुई है जिसमें पहला शब्द 'E' और Duce से मिलकर हुआ है इसमें E का अर्थ अन्दर से तथा Duce का अर्थ अग्रसर करने या आगे बढ़ने से है। इस प्रकार Educatum का अर्थ अन्दर से विकास करना है।

अन्दर से विकास का अर्थ है कि अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षक ज्ञान को बालक के मस्तिष्क में डाल कर उसे बालक के जन्मजात शक्तियों को विकसित करना है।

शिक्षा की परिभाषा ⇒ विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों द्वारा शिक्षा को अलग-अलग परिभाषाएँ दी गई हैं जो निम्नलिखित हैं:-

(i) टाइगोर के अनुसार ⇒ शिक्षा का अर्थ मोरिस्क को इस योग बनाना है कि वह शास्वत सत्य की खोज कर उसे अपना बना सके और अधीष्णक बन सके अर्थात् "सर्वोत्तम शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।"

(ii) फ्रॉबेल के अनुसार ⇒ "जीव में जो विद्यमान है उसे खोलना ही शिक्षा है। शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जो बालक के आन्तरिक गुणों और शक्तियों को प्रकाशित करती है।"

(iii) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ⇒ "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मोरिस्क की शक्ति बढ़ती है बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य की अन्तर निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"

(iv) माहत्मा गाँधी के अनुसार ⇒ शिक्षा का कार्य बालक तथा मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में अन्तर निहित सर्वोत्तम अंश का पूर्व विकास है।

(v) पैस्टालॉटसी के अनुसार ⇒ पैस्टालॉटसी द्वारा दी गई परिभाषा बहुत व्यापक है। शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का स्वाभाविक

विकसित होती है।

(ii) सी. ए. बुचर के अनुसार ⇒ "शारीरिक शिक्षा शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है जिसके उद्देश्य नागरिक के शारीरिक मानसिक भावनात्मक और सामाजिक रूप से शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से जो गतिविधियाँ उनके परिणामों को दृष्टि में रखकर चुनी गई है सक्षम बनाती है।"

(iii) ए. आर. वीमैन के अनुसार ⇒ शारीरिक शिक्षा शिक्षा का वह भाग है जो शारीरिक क्रियाकलापों के जरिये व्यक्ति का विकास करता है वह उसे प्रोत्साहन देता है।

(iv) डी. ओ. टुफर ⇒ शारीरिक शिक्षा उन अनुभवों का समुह है जो व्यक्ति को शारीरिक गतियों द्वारा प्राप्त होती है।

शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य एवं उद्देश्य ⇒ कोई भी कार्य बिना लक्ष्य या उद्देश्य के नहीं किया जाता है। शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य बालक का शारीरिक मानसिक एवं आत्मिक विकास का संतुलन बनाकर इस सामाजिक व्यवस्था में आदर्श नागरिक बनाना है।

शारीरिक शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्यों की निम्नलिखित रूपों में विवेचना की जा सकती है।

- (i) शारीरिक विकास
- (ii) बौद्धिक या संज्ञानात्मक विकास
- (iii) सामाजिक विकास
- (iv) भावनात्मक विकास
- (v) स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान का विकास
- (vi) शारीरिक क्रियाओं के प्रति सही अभिवृत्त का विकास

(i) शारीरिक विकास \Rightarrow स्वस्थ शरीर के स्वस्थ मन का विकास (वास) होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए शारीरिक गतिविधियाँ आवश्यक हैं। जब हम शारीरिक क्रियाएँ करते हैं तब शरीर के विभिन्न संस्थानों और अंगों की क्रियाशीलता बढ़ जाती है तथा इनमें सामंजस्य स्थापित होता रहता है। शरीर के अवयव और संस्थाओं की सुदृढ़ता से शारीरिक कार्यक्षमता का विकास होता है।

(ii) बौद्धिक या संज्ञानात्मक विकास \Rightarrow विभिन्न प्रकार के खेलों से भाग लेने से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है। खेलों में भाग लेने वाले खिलाड़ी उस खेल से सम्बन्धित नियमों तथा तकनीकों को शिक्षा स्वरूप में सीखते हैं और परिस्थितियों के अनुसार उन्हें व्यापार में लाता है। शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र शोध कार्य से यह प्रमाणित हो चुका है कि खेलों में भाग लेने वाले खिलाड़ी या एथलीट का शारीरिक योग्यता की पिल्डे उपयोगिता की अधिक होती है।

(iii)

सामाजिक विकास \rightarrow मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। और वह समाज में ही बेहतर ढंग से जीवन व्यापन कर सकता है।

शारीरिक शिक्षा व्यक्ति को ऐसा शारीरिक अवसर प्रदान करती है जिसमें वह अन्य व्यक्ति और व्यक्तियों के समूह में मेल-जोल बढ़ा सके इससे उसमें सामाजिकता की भावना का विकास होता है।

(iv)

भावनात्मक विकास \rightarrow शारीरिक शिक्षा व्यक्ति में स्वैच्छात्मक स्थिरता पैदा करती है। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति किसी भी प्रकार की परिस्थिति का सामना करने में सक्षम है।

(v)

स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान का विकास \rightarrow स्वास्थ्य शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम का ही अभिन्न अंग है। शराब, धूम्रपान और नशा की आदतों से स्वास्थ्य के लिये खतरनाक और इनसे होने वाली हानियों में बचाया जाता है ताकि शिक्षार्थी स्वास्थ्य शैली अपना सके।

(vi)

शारीरिक क्रियाओं के प्रति सही अभिवृत्ति का विकास \rightarrow शारीरिक शिक्षा का केवल उद्देश्य विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को पढ़ना और सीखना नहीं है। अपितु इन क्रियाओं तथा खेल-कदम व प्रतियोगिता खेलों के प्रति स्वास्थ्य दृष्टिकोण रखना भी इसका उद्देश्य है।

3) आधुनिक समाज में शिक्षा का महत्व ⇒ आधुनिक समाज में मनुष्य द्वारा स्वयं अपने चारों ओर खड़ी की गई समस्याओं से वादर विकलने में शारीरिक शिक्षा जो मदद करती है उस भी कम करके नहीं आका जा सकता आधुनिक समाज में शिक्षा का महत्व का सार इस प्रकार है।

(i) सर्वांगीण विकास ⇒ शिक्षा बच्चे के सुगीठत, मानसिक, सामाजिक, नैतिक गुणों का सर्वांगीण विकास शिक्षा उपलब्ध कराते है।

(ii) बौद्धिक विकास ⇒ शिक्षा के माध्यम से बच्चों या बच्चे के सोचने एवं समझने की शक्ति का विकास कर समाज में क्रियाशील जीवन व्यापन करने में सक्षम बनाना है।

(iii) सामाजिक समायोजन ⇒ शिक्षा अन्य लोगों के साथ मेल मिलाप का अवसर प्रदान करती है जिससे हम सामाजिक गुणों जैसे खेल भावना, इमानदारी, मित्रता के प्रति आदर की भावना जो कि व्यक्ति को सामाजिक समायोजन में मदद दे कर सिरवाता है।

(iv) सांस्कृतिक विकास ⇒ शिक्षा के माध्यम से विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप सभी लोगों की संस्कृति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जैसे क्रियाकलापों के दौरान विभिन्न संस्कृतियों की रीति-रिवाजों परमपरायण और जीवन शैली के बारे में जानने और एक दूसरे को समझने का अवसर प्रदान करती है।

- (v) खाली समय का सदुपयोग ⇒ शिक्षा खाली समय के सुधी उपयोग में भी अपना योगदान देती है। दक्षताओं और शारीरिक क्रियाकलापों से व्यक्ति अपनी फायदों, अर्जों का समुचित उपयोग करना सिखाता है और खाली वक़्त समय का सदुपयोग करता है।
- (vi) राष्ट्रीय एकता ⇒ भारतीय संविधान के अनुसार अपने देश में आज वर्गविहीन, जातिविहीन तथा शोषणविहीन समाज की स्थापना करनी है और यह तभी संभव है जब हम प्रारंभ से ही छात्र के हित में इसके लिए विद्या और संकल्प पैदा कर दें। शारीरिक शिक्षा, राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर, स्कूलाटिग एवं ग्राइडिंग आदि कार्यक्रमों द्वारा छात्रों में राष्ट्र भावना लाने और राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- (vii) व्यक्तिगत समायोजन ⇒ शारीरिक शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर व्यक्ति का पूरा-पूरा अवसर देती है और अपने लक्ष्यों के परिणामों से संतुष्टि देती है और उल जिवन में व्यक्तिगत समायोजन के लक्ष्य बनाती है।
- (viii) चारित्रिक विकास ⇒ शारीरिक शिक्षा द्वारा केवल शारीरिक और बौद्धिक विकास ही नहीं किया जाता बल्कि इसके माध्यम से व्यक्ति चारित्रिक गुणों को सरलता से आत्मसात कर पाता है। जैसे सहयोग एवं सामूहिक प्रयास आदि।

(ix) नागरिकता के गुण \Rightarrow अच्छे नागरिक किसी भी समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में सहायक होते हैं। शारीरिक शिक्षा द्वारा व्यक्ति नियंत्रण का पालन करना, खेल भावना, दूसरों के प्रति आदर एवं प्रेम, राष्ट्रीय गौरव की भावना जैसे नागरिकता के गुणों को ग्रहण करता है।

(x) नेतृत्व के गुण \Rightarrow शारीरिक शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों द्वारा बहुत से कार्य आयोजित एवं व्यवस्थित होते हैं। अनेक प्रकार के परिस्थितियों का अन्तर्गत अनेक प्रकार के परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। तत्कालीन निर्णय लेने पड़ते हैं। ऐसा करने समय क्षत्रों में नेतृत्व के गुणों अर्थात् सत्पता, धैर्य, उत्साह, साहस, ता, विवेक, ईमानदारी, आत्मनिर्भरता, निस्वार्थता, कार्यरत रहना, आत्मविश्वास, होशियारी, दक्षता, निर्णय करने की शक्ति, साधनपुण्यता आदि गुणों का विकास होता है।

(xi) भावनात्मक विकास \Rightarrow एक स्वस्थ व्यक्तित्व के विकास के लिए संवेगात्मक स्थिरता और पूर्ण रूपण स्वस्थ भावनात्मक अभिव्यक्ति अपारुधाय अंग है। यह व्यक्ति को अपना प्रभाव डालने का अवसर प्रदान करता है परन्तु निर्धारित उपलब्ध्य का यह सर्वाधिक सरल उपाय है।

(xii) मानसिक विकास \Rightarrow व्यक्ति एवं खिलाड़ी के मानसिक विकास के लिए आध्यात्मिक अपनी एक अहम भूमिका निभाती है। मानसिक विकास यदि सही हो तो वह फीट कौशलों में अपने उत्पादन को अच्छे ढंग से देखा सकता है। खिलाड़ी को मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए आत्मसंयम से काम लेना पड़ता है।

4) Scope of Physical Education :-

शारीरिक शिक्षा का क्षेत्र :- शारीरिक शिक्षा का क्षेत्र अत्याधिक व्यापक है। यह केवल शारीरिक क्रियाकलापों तक ही सीमित नहीं है। इसमें व्यक्ति के विकास के सभी पहलु शामिल होते हैं। यह बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है और मानव कार्य के सभी क्रियाकलाप आते हैं। शारीरिक शिक्षा व्यक्ति के जीवन को सुपरस करने वाली अन्तःशक्ति है जो स्कूल या कॉलेजों में पढ़ाई कर रही है। अपितु यह हर वर्ग के प्रत्येक स्तर के बच्चों के लिए अनिवार्य है। हम शारीरिक शिक्षा के कार्य क्षेत्र को निम्न भागों में बांट सकते हैं।

(i) लोक सेवा कार्यक्रम :- लोक सेवा कार्यक्रम में व्यक्ति के सभी निदेशात्मक पहलुओं पर बल दिया जाता है। इसके अन्तर्गत शारीरिक शिक्षा, स्वच्छता, प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक, जैविक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।

(ii) अन्तरंग कार्यक्रम :- यह कार्यक्रम शारीरिक क्रियाकलापों के माध्यम से आत्मरक्षा हेतु विभिन्न पक्षताओं को विकसित करता है जैसे - जुडो, कराटे तथा टाईक्वाण्डो।

(iii) बहिरंग कार्यक्रम :- यह कार्यक्रम समूहों, क्लबों, समाज, समुदाय, गाँवों, टीमों और संस्थाओं के बीच प्रतियोगिताएँ कराकर उनमें मेल-जोल जैसे अनुभवों को बढ़ाता है। इसके अन्तर्गत बहुत से खेल

भी आती हैं जैसे ⇒ क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, बॉलीवूड क्रिकेट आदि और वह स्वयं जो व्यक्ति का परिक्षण दूसरे व्यक्ति से होता है जैसे - स्प्रिंथलीड, बॉक्सिंग, कुश्ती, तैराकी, इत्यादि। शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में ही जोड़े जाते हैं।

(iv) फिटनेस एवं मनोरंजनात्मक क्रियाएँ ⇒ इसके अन्तर्गत के अलग-अलग कार्यक्रमों का अध्ययन किया जाता है। यह व्यक्ति को रोमांच, एकसन, क्रियात्पापूर और दक्षता में योग्य बनाती है ताकि व्यक्ति अपने आवश्यकताओं, इच्छाओं और भावनाओं की अभिव्यक्ति कर सके। इसमें माच पास्ट, पी.टी, क्षेत्रीय नेत्रत्व, लॉजियम, डुमबल, जिमनास्टिक इत्यादि शामिल किये जाते हैं।

(v) योगिक क्रियाएँ ⇒ योगिक क्रियाएँ भी शारीरिक शिक्षा में अलग नहीं हैं। इसमें प्रणायाम, योगासन, जलनेती, सुत्रनेती, धौती क्रिया और नौली क्रियाएँ इत्यादि शामिल की जाती हैं।

5) Terminology used in Physical Education. (Misconceptions).

शारीरिक शिक्षा के सम्बन्ध में आमक धारणानारुँ ⇒

यद्यपि शारीरिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा का आविन्न अंग माना गया है फिर भी शारीरिक शिक्षा के सम्बन्ध में अनेक आमक धारणानारुँ हैं जो इस प्रकार हैं।

i) आज भी बहुत से विद्यालय प्रशासन और पिता-माता शारीरिक क्रिया को समय और धन की बर्बादी

समझते हैं। वे समझते हैं कि जो शिक्षा के कार्यक्रम में भाग लेते हैं वे अपनी पढ़ाई ठीक से नहीं कर सकते इस विषय में सोव्य (Research) से सिद्ध हो चुका है कि आधुनिक शारीरिक क्रियाकलाप में भाग लेने वाले छात्र अपनी पढ़ाई में भी अच्छे होते हैं।

ii) कुछ अध्यापकों का मानना है कि जो बच्चे खेलों में भाग लेते हैं वे आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं। यह बिल्कुल गलत है कि समुचित प्रवृत्ति और विकास के लिए शारीरिक क्रियाएं आवश्यक हैं दूसरी ओर जो विद्यार्थी शारीरिक क्रिया में भाग लेते हैं वे इसमें भाग न लेने वाले समान आयु के विद्यार्थियों को अपेक्षा अधिक वृद्धि प्राप्त करते हैं।

iii) प्रायः जो छात्र पढ़ाई में ठीक नहीं होते उन्हें शारीरिक शिक्षा के कक्षाओं में भेज दिया जाता है यह सही है कि जो छात्र पढ़ाई में कमजोर होते हैं उन्हें खेल की बुद्धिमत्ता भी कम होती है। खेल क्रियाओं के प्रति विद्यार्थियों का सकारात्मक दृष्टिकोण होने पर ही वह खेल क्रियाओं में सफलता प्राप्त करते हैं। यही अध्ययन छात्रों में किसी विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण समुचित स्वी उपन्न कर सकें निश्चित रूप से वे पढ़ाई में भी अच्छे कर सकेंगे।

सं० १६

iv) जिसके बारे में जनसमूह में व्यापक भ्रम है। वह Physical Culture शारीरिक शिक्षा का मनुष्य को बैठ कर काम पूर करने के कु प्रभाव करने का ही दाव्य नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मनुष्य का

विकास करना है। बड़े दुभाग्य की बात है कि आज भी कुछ लोग शारीरिक शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य मानसपेशियों का विकास ही समझते हैं। बड़े-बड़े बौद्धिक लोग भी जो मनुष्य की प्रकृति का अच्छी तरह नहीं समझ पाये हैं। केवल मानसपेशियों के निर्माण पर ही बल देते हैं। ऐसे अल्पज्ञ व्यक्ति के अनुसार शारीरिक शिक्षा का शिक्षा जगत में कोई स्थान नहीं है।

वर्तमान शारीरिक शिक्षा के पुंजाशियों तथा बौद्धिक दोनों को बड़े-बड़े Physical culture है। बड़े तो मनुष्य का सन्तुलित विकास चाहती है। शारीरिक शिक्षा के फायदों का फल केवल शक्ति स्फूर्ति एवं सहीपुणता तक ही सिमित नहीं बल्कि उसमें प्रेरणा, आत्मनिश्वास, आनन्द, समाजिकता तथा समस्याओं का समाधान निकालना है।

(v) कुछ लोग हेल्थ शब्द को भ्रमपूर्ण तरीके से व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार हेल्थ शब्द रोग तथा शारीरिक कमजोरी से अर्थ रखता है किन्तु यह बात ठीक नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हेल्थ शब्द का अर्थ शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं समाजिक स्वास्थ्य है।

7) Relationship between physical Education and general Education

शारीरिक शिक्षा का सामान्य शिक्षा से सम्बन्ध →

शारीरिक शिक्षा को लम्बे समय से शिक्षा प्रक्रिया का ही एक अंगभूत हिस्से के रूप में मान्यता मिली हुई है।

मानव शरीर, मन और आत्मा का संगठित रूप है और शिक्षा इस एकीकरण को और भी मजबूत बनाती है। मानव मनो-शाारीरिक जीव है। और मन व शरीर को अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता है। मोटे तौर पर इसे विलकुल सही ढंग से व्याख्या किया है। "यह केवल आत्मा नहीं है जिसे हम परिष्कार दे रहे हैं। यह व्यक्ति है और हमें इसे दो हिस्सों में नहीं बाँटना चाहिए।"

ii) जॉनलॉक ने भी इसी तरह से विचार प्रकट किये हैं "एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मन विश्व स्तर पर स्वीकार की जाने वाली एक संक्षिप्त और परिपूर्ण परिभाषा है। शिक्षा के परिभाषा में उचित से उचित व्यक्ति के स्वरूप की मुख्य विकास में महत्वपूर्ण बदलाव ला दिया इससे यह स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि शाारीरिक शिक्षा सामान्य शिक्षा का ही एक अंगभूत हिस्सा है।"

iii) चार्ल्स स. बुकर भी यही विचार रखते हैं "शाारीरिक शिक्षा समस्त शिक्षा प्रक्रिया का ही एक अंगभूत हिस्सा है।"

अब यह सुस्थापित हो चुका है कि व्यक्ति की शारीरिक एवं विकास ही शिक्षा का प्रास्तविक सारांश है।

iv) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार "सभी शिक्षाओं, सभी परिष्कारों का परिणाम मनुष्य का बनाना होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा ने व्यक्ति निर्माण की इस जिम्दारी को पहचाना है और यह व्यक्ति की सभी पहलुओं का विकास करती है। जैसे मानसिक, शाारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक और समाजिक इन सभी का

मकसद व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है।

शारीरिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे का पूर्ण विकास होता है। शिक्षा का पहला सबक बच्चा शारीरिक कार्य व्यवहार से ही सिखाता है। स्कूल का मैदान एक छोटे क्लास रूम के तरह कार्य करता है। यह एक प्रयोगशाला है जिसमें एक साथ सैद्धांतिक प्रक्रियाएँ चलती हैं जो ज्ञान उपलब्ध करवा मन का उदार बनाती हैं। कोशल में सुधार मुक्त सोच को बढ़ावा रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहन व सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करती हैं।

सामान्य शिक्षा से सम्बन्धित शारीरिक शिक्षा सामाजिक शिक्षा का एक अंगभूत हिस्सा है। दोनों ही उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक दूसरे में अपरिहार्य हैं। दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों के तत्व अभिन्न अंग हैं।

UNIT - IV

M. Games and Sports as Man's Cultural Heritage
खेल व स्पोर्ट्स मनुष्य की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में।

Introduction → हमारे वनों से खेल व Sports आदर्श की जड़ों का हिस्सा रही है। चाहे वह उसके जीवन की जरूरत थी, अर्थात् शिकार व आवास के लिए शिकार पशु, जंतुओं व इंसानों से बचना या अमीद-प्रगद के लिए खेल व्यक्तित्व

के लिये अपरिहार बनी रही और उसकी संस्कृतिक का हिस्सा बना गई। इस अध्याय में संस्कृति के धरोहर के रूप में चर्चा करेगे ये लक्ष्मी को गिलाती है। तथा राष्ट्रीय एकता पर गहरा असर डालती है। इस पाठ में उसका राष्ट्रीय एकता में योगदान का वर्णन किया गया है।

31/8/16

खेल व Sports मनुष्य की संस्कृतिक धरोहर के रूप में। यद्यपि खेलों के उद्गार के बारे में इतिहास मान है परन्तु यह पक्के तौर पर कहा जा सकता है कि यदि मानव के जीवन का मुख्य हिस्सा भी खेलकूद ही था उसके लिए यह जीवन की आधारभूत जरूरत थी क्योंकि उसका अस्तित्व उसी पर टीका हुआ था शिकार करना, मछली पकड़ा तथा मिशाल पकना आदि पर उसका जीवन टीका हुआ था। सभ्यता के विकास और पतन के साथ खेलों जिन्दा रही और वे संस्कृति के धरोहर के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलती गई। आज कल खेल व Sports विश्व संस्कृति बन गई है।

1) क्रिडर के अनुसार संक्षेप में सांस्कृतिक सच्चाई हमेशा ऐतिहासिक सच्चाई रहती है तथा इसकी वृद्धि शीघ्र समझ जो हम गृहण कर सकते हैं। वह ऐतिहासिक है इसलिए इतिहास के पथ पर चलना हमारे लिए जरूरी है जाता है ताकि हम खेलों व Sports के द्विधा धर में जड़ तलाश कर सकते हैं।

यूनान (ग्रीस) \Rightarrow हालकी खेल मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है, परन्तु यूनान में खेल सबसे अधिक विकसित हुआ जो खेलों का स्वर्णयुग कहलाता है। यूनानी खेल प्रिय थे तथा दूसरे देशों से फुट कर रहे थे जिसके लिए उन्हें तन्दुरुस्ती की जरूरत थी तथा इसके साथ ही खेल उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई। स्पार्टा तथा सैथन्स का नाम खेलों से जुड़ा हुआ है। स्पार्टा में खेलों का मुख्य उद्देश्य ताकतवर इन्सान पैदा करना था जो देश की रक्षा कर सके। 6 साल का होने पर बच्चों को कड़ा शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाता था, उसे कूशती, जम्प, दौड़, थो, मार्च करने, घुड़दौड़ तथा शिकार इनके प्रशिक्षण का हिस्सा थे। सैथन्स में नागरिकों को ज्यादा लोकतान्त्रिक अधिकार मिले हुए थे। उसकी सेना भी खेलकूद कार्यक्रमों में लड़-चढ़ कर भाग लेती थी परन्तु वे नैतिक, मानसिक, भौतिक व सौंदर्य विकास पर अधिक ध्यान देते थे। मिमनास्टिक उनके जीवन शैली का हिस्सा था। वे ल्योहार के शौकीन थे तथा Olympic भी एक प्रकार का ल्योहार था जो यूनान को विशेष अंकार देते हुए पहली आधुनिक Olympic game 1869 में ल में ही शुरू की गई थी।

रोम (Rome) \Rightarrow रोम खेलों को अपनी सुरक्षा का अभिन्न अंग नहीं मानते थे। उनके लिए खेल सैनिक उद्देश्य के लिये ठीक थी। वे ग्रीकों लोगों की यह परकल्पना नहीं मानते थे कि खेल मनुष्य के गतिशील विकास के लिए आवश्यक है एक बार रोमन साम्राज्य मजबूत

हुआ तो बहुत हिसाबपूर्व खेलों में लिप्त हो गया
यह भी रथ के दंड आदि खेलों के लिए यह
एक अच्छा युग था।

01/09/16

काला युग \Rightarrow रोमन लोगों में भौतिक व नैतिक मूल्यों
की कमी के कारण, उनका पतन अवश्य
होना था। उन पर बरबर जातियों ने हमला करने
तथा रोमन साम्राज्य नष्ट हो गया। ये बरबर
जाति के लोग बलिष्ठ थे तथा लड़ाई व भौतिक
गतिविधियों के कारण बलवान बन गये थे। इसे
ये एक सबक यह मिलता है कि जो देश
ताकतवर व सुरक्षित रहना चाहता है उसे
शारीरिक और नैतिक रूप से मजबूत होना
चाहिए। इस बरबर जाति के हमले का एक
फायदा यह भी हुआ वे अपने साथ बलिष्ठ
व मजबूत शरीर लेकर आये तथा आन
वाली पीढ़ियाँ पैदा हुई।

मध्य युग \Rightarrow इस अवधि के दौरान इसाई
धर्म के उदय होने के कारण गति-
विधियों व खेलों में गिरावट आई, क्योंकि
अब जोर आध्यात्मिक पहलु पर दिया जान
लगा। इसाई धर्म से यह विश्वास भी मजबूत
हुआ कि शरीर में बुरी चीजें निवास करती हैं।
अतः शरीर को आत्मा के अधिन कूरना चाहिए।
जब धार्मिक लोग आत्मा पर जोर देते थे।

पुनः जागरण काल \Rightarrow चौदहवीं और सत्रहवीं के मध्य
पुनः जागरण का समय आया
इसका अर्थ है पुनः जन्म लेना। यह अवधि मध्य
काल और आधुनिक काल के बीच का है। इसमें

पूरतन विद्य ग्रीक व रोमन की शिक्षाओं को पुनः जीवित किया गया खेलकूद के लिए यह अवधि इसलिये भी महत्वपूर्ण है कि इस दौरान शरीर व आत्मा के दोहरे मापदंड को समालोकित किया गया था तथा माना गया था कि शरीर और आत्मा को अलग नही समझा जा सकता तथा खेलकूद द्वारा सीखलाई जा सकती है।

जर्मनी → यूरोप के केन्द्र में उपस्थित होने के कारण जर्मनी ने खेलकूद पर बहुत प्रभाव डाला वेस्टो ने खेल के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया वह इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया जिमनास्टिक उच्च स्थान पर था तथा "Gust Muehler" जिसे जिमनास्टिक का "GodFather" कहा जाता है ने इसे वैज्ञानिक प्रथा में प्रयोग किया तथा इसमें खेल व तैराकी को शामिल किया उसका दिग्गजत्व इतना कामयाब हुआ की लोग अपने बच्चे को इस में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने लगे।

Sweden → शारीरिक विज्ञान के इतिहास में "Henrik Ling" का नाम सबसे ऊपर आता है उसमें उसने "Gymnastic" का ऐसा ढंग अपनाया जिसे "Swedish Gymnastic" कहते हैं जिसे बाद में "America" ने भी अपनाया। Ling ने वैज्ञानिक सोच के आधार पर "Anatomy" और "Physiology" को भी खेल गतिविधियों में लगेया।

Denmark → यहाँ "Frøch nightangle" ने शारीरिक शिक्षा विज्ञान की नींव रखी तथा उसकी कोशिशों के कारण इसे स्कूलों पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

उसकी मृत्यु के बाद "Denish Rifle Club" की स्थापना हुई जहाँ Shooting या मिवेरी शील में ट्रेनिंग दी जाती थी।

UNIT-IV

Meaning and definition of sociology and sports
Sociology

समाजशास्त्रीय आचार

Introduction ⇒ मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना उसका अस्तित्व संभव नहीं है। अरस्तु ने कहा है कि जो व्यक्ति समाज में नहीं रहता है या तो वह दीव्य है या भ्रष्ट। इस समाज के बिना मनुष्य का सामाजिक नैतिक व शारीरिक विकास संभव नहीं है।

Meaning ⇒ समाजशास्त्र समाज का क्रम व व्यवस्था अध्ययन करने वाला विज्ञान माना जाता है। महान समाजशास्त्रीय "आगस्त कामटे" उन्होंने ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग 1836 में किया था। समाजशास्त्र अंग्रेजी भाषा Sociology शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है जो दो शब्दों Socio तथा Logos से मिलकर बना है। Socio शब्द लैटिन भाषा के Socio तथा Logos शब्द ग्रीक भाषा के Logos से मिलकर बना है जिसका अर्थ है "शब्दीकरण" अर्थात् समाज का विज्ञान या अध्ययन है।

Definition ⇒ "वर्ड के अनुसार" समाजशास्त्र का विज्ञान है।"

ii) जीस बर्ट के अनुसार "समाजशास्त्र समान्यतः समाज के विज्ञान में परिष्कृत किया जाता है।"

iii) मैकाइवर एवं पेज के अनुसार "समाज समाजिक सम्बन्ध का जाल है।"

उपरोक्त परिभाषायों से यह स्पष्ट हो जाता है कि समाजशास्त्र समाज में होने वाले प्रत्येक घटना और उसके विकास एवं विशेष क्षेत्र के प्रत्येक पहलु का समूह रूप से अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

शारीरिक शिक्षा एवं समाजशास्त्र

शारीरिक शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक एवं समाजिक विकास के लिए तत्पर रहती है। समाजशास्त्र समाजिक सम्बन्धों एवं समाजिक क्रियाओं का अध्ययन करता है और शीघ्र तौर पर शारीरिक शिक्षा को स्पष्ट रूप से मदद करता है या हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र समाजिक शिक्षा का उसके उद्देश्य एवं लक्ष्यों को पूरा करने में पुण्यत सहयोग करता है।

शारीरिक शिक्षा भी समाजशास्त्र के तरह दैनिक जीवन से जुड़ी हुई है। शारीरिक शिक्षा जीविका अर्जित करने की तैयारी में महत्तम युक्त एवं उत्साहित जीवन बिताने में सहायक होती है। समाजिकत में सबसे अधिक वृद्धि खेलों के द्वारा ही होती है और एक-दूसरे के प्रति मित्रता का आवरण होता है। जब भी कोई टीम किसी प्रतियोगिता में भाग लेने जाते हैं तो खेलों के नियम के साथ-साथ समाजिक नियमों का भी पालन करती है।

UNIT - III

- 5) Different Ages -
- Chronological - वास्तविक आयु
 - Physiological - दैहिक आयु
 - Anatomical - शारीरिक संरचनात्मक
 - Mental - मानसिक आयु

Different Ages ⇒ विद्यालय में छात्रों का वर्गीकरण करने के लिए अलग-अलग माप-दंड बनाया गया है। खेलकूद या शारीरिक शिक्षा में विभिन्न आयु वर्ग में बच्चों की विभिन्न अतिविधियों, योग्यताओं, क्षमताओं को ध्यान में रखना होता है। व्यक्ति की आयु वर्षों, महीनों और दिनों में जानी जाती है। यह रिकॉर्ड स्कूलों में भी दर्ज रहती है। परेशानी तक होती है जब बालक की जन्मतिथि उपलब्ध नहीं हो पाती है। इस परिस्थिति में बालक की उम्र का पता शारीरिक संरचना आयु, दैहिक आयु तथा मानसिक आयु के द्वारा पता लगाई जाती है।

आयु का पता निम्नलिखित माध्यम से लगाया जाता है।

- Chronological Age ⇒ वास्तविक आयु की तिथिक आयु भी कहते हैं। यह सालों, महीनों और दिनों में लिखी जाती है। यह आयु बालक के जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु तक मानी जाती है। वास्तविक आयु की उपयोगिता एक बालक के किशोर अवस्था, नौकरी पाने के लिए स्वयं स्कूल में प्रवेश लेने के लिए तथा शारीरिक शिक्षा स्वयं खेलकूद के क्रियाओं में जुनियर व सीनियर के वर्गीकरण में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसी कारण खेल वैज्ञानिक वास्तविक आयु के आधार पर बच्चों

के वर्गीकरण का विरोधी है। यद्यपि यह अलग-अलग शारीरिक क्रियाकलापों पर निर्भर करती है।

b) Physiological Age → देहीक अथवा काइक आयु वाला बालक की देहीक क्षमताओं से सम्बन्धित है। देहीक आयु का पता लड़कों की आवाज तथा लड़कियों की उनके मानसिक ढंग से आयु की जानकारी प्राप्त की जाती है। एक बालक वास्तविक आयु से बड़े दिखवाई देता है जबकि देहीक आयु से अपरिपक्व होता है क्योंकि विभिन्न ग्रंथियों से हार्मोन्स का स्त्राव कर्म कम व अधिक हो जाता है जिससे उनके विकास व वृद्धि पर भी प्रभाव पड़ता है। शारीरिक क्रियाकलापों का वर्गीकरण बालक की शारीरिक क्षमता ज्ञात करने के उपरान्त ही करना चाहिए जो उनके आयु वर्ग के बच्चों में देहीक रूप से मेलरवाते है

c) Anatomical Age → शारीरिक संरचना के काल तंत्र के विकास और वृद्धि से सम्बन्धित है बालक में कंकाल तंत्र के विकास को पोषण कि गुणवत्त भी परिभाषित करती है। शारीरिक संरचनात्मक आयु दांतों से भी गिनी जाती है। बालकों के दाँतों की संख्या से विशेष आयु का पता लगाया जाता है। जूनियर व सन-जूनियर खेल प्रतियोगिता में एक डॉक्टर के माध्यम से दाँतों का परिक्षण कराकर आयु का निर्धारण करके खिलाड़ी को प्रति भाग करने की अनुमति दी जाती है। शारीरिक संख्यात्मक आयु का बहुत अधिक महत्व है। इसे खिलाड़ी की उम्र जानने में मदद मिलती है।

d) Mental Age के मानसिक आयु का सम्बन्ध वालक के मानसिक विकास से है मानसिक आयु का पता मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक परिक्षणों से लगाया जाता है। कुछ बच्चे कई वर्षों के हो जाते हैं किन्तु उनकी शारीरिक स्थिति बच्चों की तरह रहती है व अपरिपक्व होते हैं। उनका मानसिक विकास भी पूर्ण नहीं हो पाता है। मनोवैज्ञानिक परिक्षणों से खेलों में लड़के व लड़कीयों की आयु का पता लगाया जाता है। इससे उनकी पौष्टिकता, यादास, स्मरण शक्ति आदि का पता लगाने में सहायता प्राप्त होती है।

9/9/16

UNIT - III

4) Body types by Dr. William Sheldon.

शरीर के प्रकार Dr. William Sheldon द्वारा ⇒

William Sheldon ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण शारीरिक दृष्टि से किया है। इसको इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि "Somato type" व्यक्तित्व तीन प्रकार के होते हैं। शारीरिक शिक्षा का क्षेत्र बुनियादी तौर पर शारीरिक प्रक्रियाओं का क्षेत्र है तथा प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक शारीरिक क्रियाओं को करने में सक्षम नहीं होता है। इसका स्पष्ट कारण है कि इसकी शरीर की संरचना, आकार, योग्यता भिन्न-भिन्न होती है। शारीरिक शिक्षा के सुयोग्य कार्यक्रम का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि बालक की शारीरिक विशेषताओं के आधार पर भिन्न-भिन्न वर्गों में बाटा जाये और अच्छे अनुकूल प्रक्रियाएँ दी जाय।

Dr William Sheldon के अनुसार शरीर तीन प्रकार के होते हैं :-

i) Endomorphic - गोलकाय या सुडौलकाय ।

ii) Mesomorphic - आथताकार या मध्यकाय ।

iii) Ectomorphic - लम्बाकार ।

14/9/16

i) Endomorphic ⇒ इस प्रकार के शरीर वाले व्यक्ति मजबूत लम्बी पैरों संकुचोंड शरीर एवं त्वचा अधिक मोटी और शरीर पर बालों की मात्रा कम पायी जाती है। इनका स्त्रि लगभग गोल एवं पाचन क्रिया मजबूत व ठीक से ठीक भोजन पचाने की योग्यता होती है। इनको ज्यादा बल वाले क्रियाओं में भाग लेना ज्यादा रुचिकर होता है। जैसे .पावर लिफ्टिंग, कुश्ती, दौड़ा.

ये शरीर से मोटे तथा स्वभाव से किनीदी होते हैं साथी ही ऐसा चाहते हैं जो उन्हें परमन्न रख सकें। शारीरिक चाहेने वाले होते हैं।

ii) Mesomorphic ⇒ ऐसे व्यक्ति गठीले तथा मजबूत शरीर वाले होते हैं यह व्यक्ति स्वभाव से क्रिया शील, शक्तिशाली तथा आक्रमक एवं फुरतीये स्वभाव के होते हैं। ऐसे व्यक्ति की शारीरिक संरचना माध्यम दर्जे की होती है। इनके कंधे चौड़े मांसपेशिया पचुर मात्रा में होती है। इनके सिर की हड्डी चौड़ी मुडी हुई होती है। इस प्रकार के व्यक्ति लगभग सहनशीलता वाले क्रियाओं को होंड कर सभी शारीरिक क्रियाओं में भाग लेने योग्य होते हैं इसलिये इन्हें ज्यादा मजबूत एवं शक्तिशाली माना जाता है जैसे हॉकी, फुटबाल आदि।

Ectomorphic \Rightarrow इस प्रकार के व्यक्ति का सारा शरीर दुबला पतला एवं लम्बा होता है। इसमें व्यक्ति पाँचों पतला लम्बा होता है यह एक-दम छोटा होता है इसका शारीरिक भार कम होता है। कंधे नीचे की ओर झुके होते हैं। हाथ-पैरों की अंगुलीयों की लम्बाई अधिक होती है। इनकी वाइटल कैपिसिटी (जीवन धारिता) अधिक होती है। जबकि मध्यम आकार का होता है। फेफड़े छोटे तथा पेट लम्बा होता है जिनके कारण इनका पाचन शक्ति निम्न स्तर का होता है परन्तु परिश्रम के बाद इस प्रकार के व्यक्ति Indurance Activity में प्रभावित होते हैं जैसे Basketball, bollyball आदि इस प्रकार के व्यक्ति दुबले पतले बुद्धिमान व संकीर्ण होते हैं।

15/09/16

Kresekmer के अनुसार शरीर को चार भागों में विभक्त किया गया है :-

- 1) Athletic
- 2) Picnic
- 3) Asthenic
- 4) Dyplastic

व्यक्ति के संदर्भ में अलग-अलग शिक्षा शास्त्रियों ने अपने विचार पृथक-पृथक प्रकट किये हैं जिसमें Kresekmer के अनुसार व्यक्तित्व चार प्रकार के होते हैं।

- 1) Athletic ⇒ इस प्रकार के व्यक्ति अच्छी मसपेशी हाथ लम्बे और चौड़े होते हैं इनके कंधे चौड़े तथा व्यक्ति काफी में रुचि रखते हैं वे चिन्ता मुक्त एवं दूसरे से सामान्यतः स्थापित करने हेतु तत्पर रहते हैं।
- 2) Picnic ⇒ इस प्रकार के व्यक्ति सहासी होते हैं और गोल आकृति के होते हैं इस तरह के व्यक्ति कुछ खाने के होते हैं। शरीर मोटा गोल और चुरबी (fat) होता है इनका पेट निकला हुआ तथा सीना चौड़ा होता है। ये हमेशा खाने से मुटुल स्वभाव के होते हैं।
- 3) Asthenic ⇒ इस प्रकार के व्यक्ति पतले, कमूला, शारीरिक गठन वाले लम्बे अंग वाले होते हैं। दूसरे से अपनी निन्दा सुनना नहीं चाहते हैं।
- 4) Dyplastic ⇒ यह व्यक्ति अनुचित शारीरिक अनुपात वाले तथा विशेष शारीरिक गठन रखने वाले होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति के व्यक्तित्व में शारीरिक विकास की कई असमान्यता भी पाई जाती है।

19/09/16

UNIT - III

- 1) Growth and development - meaning, Importance, and stage of development.

Introduction ⇒ शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का विकास करना है। विज्ञान और तकनीकी शास्त्र होने के नाते इस उद्देश्य को पाने की दिशा में हरशक प्रयास करना चाहिए। हमारी जीवन लीला जैसा की बताया जा चुका है। गणना के समय से ही हो जाती है कितनी विचित्र सी बात लगती है कि एक छोट से निश्चित अंश से धीरे-धीरे बड़े हुए हम मान की अवस्था को प्राप्त हो गये हैं निश्चय ही ये सब और वातावरण सम्बन्धीत शक्तियों के परिपूर्ण संयोग का फल है। शिक्षा, चाहे औपचारिक हो या अनौपचारिक हो इससे वृद्धि और विकास के मार्ग में बच्चे का भली भ्राती पथ प्रदर्शन कर सकती है।

प्राकृति ने जीने जीव-जन्तु एवं पेड़-पौधों को बनाया है उनका विकास और वृद्धि अवश्य होता है। थोड़ा विकास और वृद्धि की गति तेज और धीमी हो सकती है किन्तु वह विकास प्राकृतिक होता है। शारीरिक विकास एवं वृद्धि कभी कभी अप्राकृतिक ढंग से भी होती है। जब हम प्राकृतिक के नियमों का उल्लंघन करते हैं तो विकास की गति बाधित होती है।

Meaning of Growth and development ⇒ जन्म के ही विकास एवं वृद्धि की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। जन्म लेने के बाद जीवधारियों के शरीर में वृद्धि होने

लुगती हैं प्राणीयों का शरीर कोशिकाओं द्वारा बना होता है। कोशिका शीघ्र ही एक से दो तथा दो से चार में विभक्त हो जाती है। इनका कार्य भी अलग-अलग हो जाता है और हर जगह की कोशिकाएँ अलग-अलग स्थानों पर कार्य करने लगती हैं। जीव जो महीने के बाद शिशु के रूप में जन्म लेता है। तब पश्चात् वह बालक बनता है और फिर किशोर, युवा एवं प्रौढ़ बनता है। विकास बालक के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है जबकि वह एक निश्चित अवधि के बाद रुक जाती है अर्थात् विकास वृद्धि से अधिक व्यापक शब्द है।

20/09/16

Different between growth and development :-

वृद्धि और विकास में अंतर :-

	<u>Growth</u>	<u>Development</u>
1)	वृद्धि से आशय शारीरिक एवं दैनिक परिवर्तनों से है।	जबकि विकास से आशय शरीर के विभिन्न शारीरिक, मानसिक तथा दैनिक संगठन से है।
2)	वृद्धि का सम्बन्ध शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता से है।	जबकि विकास वातावरण से सम्बन्धित होता है।
3)	वृद्धि किसी विशेष पक्ष अथवा आन्शिक स्वरूप को ही व्यक्त करता है।	जबकि विकास प्राणी से होने वाले कुल परिवर्तनों को योग है।
4)	वृद्धि की मापन सही है जैसे शरीर की लम्बाई एवं	जबकि विकास के परिवर्तनों को देखा जा सकता है जैसे आन्शिक

भार की वृद्धि को मापा जा सकता है।

पारिवर्तनी संवत्त योग्यताओं को केवल अवलोकित किया जा सकता है।

5) वृद्धि निश्चित आयु के पश्चात रुक जाती है।

जबकि विकास जीवन परन्तर चलता रहता है।

6) वृद्धि पर वातावरणीय कारकों के अनुसार प्रभाव पड़ता है। वह वाक्प्रकाय अथवा दानि कारक हो सकता है।

जबकि इसमें परिपक्वता के विकास का सम्बन्ध वृद्धि में ही निहित होता है।

22/09/15

Importance of growth and development :-

वृद्धि और विकास का महत्व :-

*

*

विकास का क्रम हमें यह बताता है कि रुक दी जाती है। हमें यह बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस दिशा में वृद्धि और विकास होनी चाहिए वही वास्तव की उच्च दिशा या अपरुक्षा में विकास एवं वृद्धि हो रही है। यदि ऐसा नहीं है तो हमें उसे उचित वृद्धि और विकास में सहयोग दे सकते हैं।

*

बच्चे का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि विकास एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं।

*

यह सिद्धान्त हमें बताता है कि सभी बालकों में विलेख एवं वृद्धि में भिन्न पाई जाती है। इसलिए किसी बालक के वृद्धि एवं विकास की तुलना दूसरे बालक

नहीं करनी चाहिए।

* इसे हमें बालक में आगे होने वाले वृद्धि और विकास के बारे में पता चलता है इसके आधार पर ही माता-पिता और अध्यापक बालक इन समस्याओं को हल कर सकते हैं। तथा उसमें होने वाले परिवर्तनों के लिए अपने आप को तैयार कर सकते हैं।

* वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों मिलकर ही बालक की वृद्धि एवं विकास में सहयोग देते हैं माता-पिता व अध्यापक वातावरण में अनुकूल सुधार लाकर बच्चे के वृद्धि एवं विकास में सहयोग कर सकते हैं।

* बालक के वृद्धि और विकास से हम उसके आगे भविष्य का पता लगाने सकते हैं। बालक आगे चलकर क्या बन सकता उसके लिए हम उसे प्रेरित कर सकते हैं।

Stage of development :-

Imprecise -
जन्म से 5 साल तक बानी जाती है।
का आकार 9.5 तथा भार 7.5 ग्राम या उस 4.5 किलो
बाद मुलायम मोसपरीय होती व कोमल होती है।
जन्म के बाद लवचा का रंग पथार होने लगता है।
नवजात शिशु कुदक (रोता) करता है और उसकी
उत्सर्जन क्रिया आरंभ हो जाती है और भूख के
प्रमुख रोता है तथा उस अवस्था में बालक 15 से 20
घण्टे सोता है। बरि - बरि उसमें यह परिवर्तन
पथार होने लगता है।

शैशावस्था :-

यह अवस्था
नवजात शिशु
या उस 4.5 किलो
होती है।
होने लगता है
है और उसकी
भूख के
बालक 15 से 20
यह परिवर्तन

क्री एण्ड क्री के अनुसार। —

(11). एटलर के अनुसार। —

बालक के कुछ जस के बाद कुछ माह ही व निश्चित किया जा सकता है कि जीवन में उसका क्या स्थान है केंद्र लगातार व कोण्ट भार हाऊन चाइल्ड स्टैन्ड इन रिलेशन टू लार्फ अब्यूय मन्थ आफ्टर इन बर्थ।

(12). स्टैन्ड के अनुसार। —

बालक अपने भारी जीवन के प्रथम दो वर्ष में यद्यपि किसी भी आयु में परिवर्तन हो सकता है प्राश्निक प्रवृत्तिया आग्रियस संकेत बन रहते हैं।

(13). गुड एनफ के अनुसार। —

व्यक्ति का बितना भी मानसिक विकास होता है उसका आधा उ वर्ष की आयु तक ही जाता है।

वैशावरथा की विशेषताएं

(14). आरीरक विकास में त्रिव्रता। —

वैशावरथा के प्रथम उ वर्ष में शिशु का आरीरक विकास अति त्रिव्र अति ही होता है। उसी भाद व लावर्श में वृद्धि होती है। उ वर्ष के बाद विकास की गति धीमी हो जाती है। अथकी अग्रियों आन्तरिक मासपेशियों आदि का क्रायक

होता है।

(2) मानसिक क्रियाओं में तीव्रता :-

शिशु की मानसिक क्रियाओं में पर्याप्त तीव्रता होती है। 3 वर्ष की तक शिशु लगभग सभी मानसिक कार्य करने लगती है।

(3) सिखने की प्रक्रिया में तीव्रता :-

शिशु को सिखने की प्रक्रिया में बहुत तीव्रता है और अनेक आवश्यक बातों को सिख लेता है। ~~उसका~~ ~~असम~~ ~~का~~ ~~कथन~~ ~~है~~।
बालक प्रथम 6 वर्षों के बाद 12 वर्षों से दुगुना सिख लेता है।

(4) बेकसक्ति का अभाव :-

शिशु अच्छी मार बुरी उचित और अनुचित बातों का ज्ञान नहीं होता वह उन्ही कार्यों को करना चाहता है उसको जान-बूझता होता है भले वही वह अवांछनीय हो इस प्रकार इसमें बेकसक्ति का पूर्ण अभाव होता है।

(5) सामाजिक भावना का विकास :-

इस अवस्था का अन्तिम वर्षों के अन्दर सामाजिक भावना का विकास होने लगता है जैसे- वे शिरोना मिरा है। में उसको नहीं दुगी। मेरे भाई को क्यों मारा में रही बोलेंगी।

(6) दोहराने की प्रवृत्ति ⇒ इस अवस्था में बच्चे किसी शब्दों के तथा गतिविधियों का दोहराने की प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगती है। जो शब्द हम बोलते हैं। वह

उसे ही बार-बार दोहराने है तथा हमारे द्वारा कि गयी क्रियाओं का नकल करते हैं।

(7) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति — छोटे बच्चे किसी भी चीज का अनुकरण बहुत जल्दी करते या फिर कोई भी कार्य देखकर करते हैं तथा उसका अनुकरण करते हैं।

(8) शैशवावस्था में मानसिक विकास —

बाल्यावस्था — बाल्यावस्था में मानव जीवन का वह स्वर्णिम समय है जिसमें उसका स्वर्णिम विकास होता है।

मिंटेल के अनुसार — यद्यपि ये यह मानते हैं बालक का विकास जल्दी (5) वर्षों में समाप्त हो या हो जाती है लेकिन बाल्यावस्था में विकास की यह सम्पूर्णता गति प्राप्त करती है। और एक परिपक्व व्यक्तिके निर्माण के और अग्रसर होती है। शैशवावस्था के बाद बाल्यावस्था का आरंभ

होती है। यह अवस्था बालक के व्यक्तित्व की निर्माण की होती है।

Bleyaen (ब्लेयर) के अनुसार शैक्षिक दृष्टि कोण से जीवन चक्र में बाल्यावस्था से अधिक कोई महत्व पूर्ण अवस्था नहीं है। जो शिक्षक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते हैं उन्हें बालकों को उनके आधारभूत आवश्यकताओं का उनकी समस्याओं से उनकी परिस्थितियों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए जो उनके व्यवहार को रूपान्तरित और परिवर्तित करती है।

बाल्यावस्था की विशेषताएँ - यद्यपि बाल्यावस्था को 6 से 12 वर्ष तक माना जाता है। इस अवस्था में विशेषतः विकसित होती है।

शारीरिक व मानसिक स्थिरता - या 7 वर्ष के आयु के बाद बालक के शारीरिक विकास की स्थिरता आ जाती है। वह स्थिरता शारीरिक मानसिक शक्तियों का दृढ़ता प्रदान करती है। फलस्वरूप उसका परिपक्व सा तथा वह स्वयं-व्यस्क सा जान पड़ता है। इसलिये Ross (रोस) ने बाल्यावस्था को मिथ्या परिपक्वता का काल बताया है। शारीरिक व मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था का महत्वपूर्ण विशेषता है। इस अवस्था में विकास का अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों को प्राप्त करता है।

Covell के अनुसार - बालक के विकास और उसके सामान्य व्यवहार का

सह सम्बन्ध इतना महत्वपूर्ण होता है कि यदि हम समझना चाहें कि भिन्न-भिन्न बालकों में क्या समानताएँ हैं क्या भिन्नताएँ हैं। आप छात्र के साथ

व्यक्ति में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं। तो हमें बालक शारीरिक विकास का अध्ययन करना होगा।

मानसिक योग्यताओं में वृद्धि :- बाल्यावस्था में बालक की मानसिक योग्यताओं में निरंतर वृद्धि होती है। उसकी संवेदना और पृथक् कारण की शक्ति में वृद्धि होती है। यह विभिन्न बातों के बारे में तर्क और विचार करने लगता है। यह साधारण बातों पर अधिकतर अपने ध्यान को केन्द्रित कर सकता है। उसमें अपने पूर्व अनुभवों को स्मरण रखने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है।

जिज्ञासा की प्रवृत्ति :- बालक की जिज्ञासा विशेष रूप से प्रबल होती है। यह जिज्ञासा के सम्पर्क में आता है। उसके बारे में प्रश्न पूछकर हर तरह की जानकारी उसके यह प्रश्न शैशवावस्था के साधारण प्रश्नों से भिन्न होते हैं। अब वे शिशु के सामान्य यह नहीं पूछता है। यह ऐसे क्या है या यह ऐसे कैसे हुआ है।

वास्तविक जगत से सम्बन्ध :- इस अवस्था में बालक शैशवावस्था के काल्पनिक जगत का परित्याग करके वास्तविक जगत में प्रवेश करता है। यह पृथक् वस्तु से आकर्षित होकर उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। स्टेक के शब्दों में बालक अपने को अति विशाल संसार में पाता है और उसके बारे में जल्दी से जल्दी जानकारी प्राप्त करना चाहता है।

सामाजिक गुणों का विकास :- बालक विद्यालय के हाते और अपने समूह के सदस्य

के साथ प्राप्त समय व्यतीत करता है अतः उसे अनेक सामाजिक गुणों का विकास होता है जैसे सहयोग, सहभावना, सहनशीलता, आज्ञाकारी आदि।

नैतिक गुणों का विकास इस अवस्था के आरम्भ के विकास होने लगता है। स्कूल के क्षमता अनुसार 6 से 8 वर्ष के बालकों में अच्छे पुरे के बालकों से पूर्ण व्यवहार इमानदारी और सामाजिक मूल्यों के भावना का विकास होने लगता है।

सामूहिक खेलों में रुची : बालक को सामूहिक खेलों में अत्यधिक रुचि होती है वह छः या सात वर्ष की आयु में छोटे समूहों में काफी समय तक खेलता है खेल के समय बालकों की अपेक्षा बालकों में झगड़ें अधिक होती हैं। 11 या 12 वर्ष की आयु के बालक पक्षीय खेलों में भाग लेने लगता है स्ट्रेग का विचार है ऐसा साथ ही छोटे खेल हो जिसे 10 वर्ष के बालक न खेलते हो।

स्त्रियों में परिवर्तन : बालक के स्त्री में निरन्तर परिवर्तन होता है वह स्थाई रूप से साधारण न करके वातावरण के साथ परिवर्तित होती रहती है कोल एण्ड ग्रुस ने लिखा है 6 से 12 वर्ष की अवधि की एक अपूर्ण विशेषता है मानसिक स्त्रियों में अस्पष्ट परिवर्तन है।

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप : इस अवस्था में बालक विद्यालय जाने लगता है और नवीन अनुभव प्राप्त होते हैं अपेक्षा रूप अनौपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया के मध्य उसके विकास

होता है। बाल्यावस्था शैक्षिक दृष्टि कोण से बालक के निर्माण की अवस्था है इस अवस्था में बालक अपना अलग समूह बनाने लगता है। इससे चुस्ती की आयु भी कदा गूया है। इस अवस्था में शिक्षक का स्वरूप इस प्रकार होता है —

भाषा के ज्ञान पर बल: — इस अवस्था में बालक को भाषा में बहुत रुचि होती है इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक है कि बालक भाषा का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त कर सके।

उपयुक्त विषयों का चुनाव — बालक के लिए कुछ ऐसे विषयों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें और इसके लिये लाभप्रद भी हो इस विचार से निम्न विषयों का चुनाव करना चाहिए।
विषय: — गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, पत्र लेखन, सुलेख, निबन्ध रचना आदि।

शैक्षक विषय सामग्री — बालकों की रुचियों में विभिन्न रूप परिवर्तन आता, होती है अतः उनकी पुस्तकों की विषय सामग्री में रोचकता और विभिन्नता होनी चाहिए इस दृष्टिकोण से विषय सामग्री का सम्पूर्ण अग्रलिखित से होना चाहिए — पद्य, हास्य, किताब, नाटक, पाठ्यसाधन, वीर पुरुष, साहसी, कार्य, आचरणजनक कार्य आदि बात।

विज्ञान की संतुष्टि — बालक में विज्ञान की संतुष्टि होती है। अतः उसे की जावे। शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे उसके इस प्रवृत्ति को पूर्ण हो।

रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था \rightarrow बालक की संरचनात्मक कार्यों में विशेष रूचि होती है अतः विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की संरचनात्मक कार्यों की व्यवस्था की जाती चाहिए।

पर्यटन एवं स्काउटिंग की व्यवस्था \rightarrow लगभग 9 वर्ष की आयु में बालक में निरुद्देश्य ऊपर-उपर घुमने की प्रवृत्ति होती है उसकी इस प्रवृत्ति को संतुष्ट करने के लिए पर्यटन एवं स्काउटिंग को उसके शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।

नैतिक शिक्षा : — ट्याजे ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि लगभग 8 वर्ष का बालक अपने नैतिक नियमों का निर्माण और समाज के नैतिक मूल्यों में विश्वास करने लगता है उसे इन मूल्यों का उचित निर्माण और इन नियमों में दृढ़ विश्वास रखने के लिए नियमित रूप से नैतिक शिक्षा दी जाती है।

प्रेम व सहानुभूति पर आधारित शिक्षा \rightarrow बालक कठोर अनुशासन पसन्द नहीं करता है वह शारीरिक दण्ड व बल प्रयोग और डांट-उपट से बचना करता है वह उद्देश्य नहीं सुनना चाहता है अतः अकी शिक्षा इनमें से किसी पर आधारित न होकर प्रेम व सहानुभूति पर आधारित होनी चाहिए।

किशोरावस्था \rightarrow मानव जीवन की विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। बाल्यावस्था के समाप्त होने पर किशोरावस्था शुरू होती है।

यह अवस्था युवावस्था अथवा परिपक्वता तक रहती है।
बाल्यावस्था के समापन अर्थात् 13 वर्ष की आयु से
किशोरावस्था आरम्भ होती है। इस अवस्था का तुफान
रूप सर्वेगो की अवस्था कहा गया है।

जरीशल्ड के शब्दों में किशोरावस्था वह समय
बाल्यावस्था से परिपक्वता है जिसमें विचारशील व्यक्ति
की ओर संक्रमण करता है।

स्टेनली हॉल किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तुफान
तथा विरोध की अवस्था है।

मनोवैज्ञानिकों
का कहना है कि इस अवस्था की अवधि आधुनिक युवा
7 वर्ष से 12 से 18 वर्ष तक की आयु होती है। इस
अवस्था की आरम्भ होने की आयु लिंग प्रजाति,
जलवायु, व्यक्ति के स्वास्थ्य आदि पर निर्भर करती है।
सामान्यतः बालकों की किशोरावस्था लगभग 13 वर्ष की
आयु में बालिकाओं की लगभग 12 वर्ष की आयु में
आरम्भ होती है। भारत में यह आयु पश्चिम के
ठण्डे देशों की अपेक्षा एक वर्ष पहले आरम्भ हो
जाती है।

किशोरावस्था की मुख्य विशेषताएँ : किशोरावस्था को
दवाष, तनाव, तुफान
की अवस्था माना गया है। इस अवस्था की विशेषताओं
को एक शब्द परिवर्तन में व्यक्त किया जा सकता है।
जिन परिवर्तनों की ओर संकेत किया गया है। इससे
सम्बन्धित विशेषताएँ निम्नलिखित हैं : -

शारीरिक विकास : किशोरावस्था को शारीरिक विकास
का सर्वश्रेष्ठ काल माना जाता है।

इस काल में किशोर के शरीर में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है जैसे - भार और लम्बाई में तीव्र वृद्धि मांसपेशियों एवं शारीरिक दायें में वृद्धता किशोर में दाढ़ी एवं मुँह रोमवली एवं किशोरीयों में प्रथम मासिक आवृत्त का दर्शन आदि।

कौल सैनिक \Rightarrow किशोर एवं किशोरीयों दोनों को अपने शरीर के स्वास्थ्य की चिन्ता रहती है किशोरों के लिए सतल स्वरूप और उल्लाही बनाना एवं किशोरीयों के लिए अपनी आकृति की नारी जारी रखा आकर्षण प्रदान करना महत्वपूर्ण होता है।

मानसिक विकास \Rightarrow किशोर के मास्तिष्क का लगभग सभी दिशाओं में विकास होता है उसे विशेष रूप से अग्रलिखित निर्माण पाये जाते हैं कल्पना विवा सपनों की बहुलता सोचने समझने व तर्क करने की शक्ति में वृद्धि, विशिष्टी मानसिक दशाएँ।

कौल सैनिक के शब्दों में \Rightarrow किशोर के मानसिक जिज्ञा का विकास होता है अतः वह सामाजिक आर्थिक राजनैतिक व अन्तराष्ट्रीय समस्याओं में सूचि लेने लगता है वह इन समस्याओं का सम्बन्ध में अपने विचारों का निर्माण भी करता है।

द्विष्ट व व्यक्तिगत मित्रता \Rightarrow किसी समूह का सदस्य होते हुए भी किशोर किसी एक या दो बालकों से द्विष्ट सम्बन्ध रखता है जो उसके परम मित्र होते हैं जिससे वे अपने समस्याओं के बारे में स्पष्ट रूप से सातचित करता है। प्लटन के अनुसार 'द्विष्ट व व्यक्तिगत मित्रता' अथवा किशोर वस्था कि विशेषता है।

2
व्यह्वार विभिन्नता \Rightarrow किशोर में आवेगों और अवेगों की प्रबलता होती है यही कारण है कि वे विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार का व्यह्वार करता है उपाहरण के लिए किसी समय वह अव्याधिक क्रियाशील होता है और किसी समय वह अव्याधिक शान्त और किसी समय साधारण रूप से उत्साह पूर्ण और किसी समय आश्चर्याधारण रूप से उन्सादीन B.N. Gha के अनुसार हमारे सके अवैवात्मक व्यह्वार में विरोध होता है पर किशोरावस्था में यह व्यह्वार विशेषरूप से स्पष्ट होता है।

स्वतन्त्रता व विद्रोह की भावना \Rightarrow किशोर में शारीरिक व मानसिक स्वतन्त्रता की प्रबल भावना होता है वह बड़े के आदेश-विभिन्न परम्पराओं रितिरिवाजों अन्त विश्वास के बन्धनों में न बन्धकर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहिये। यदि किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगाया जाता है तो उसमें विद्रोह की ज्वाला फुट पड़ती है।

काम शक्ति की परिपक्वता \Rightarrow

अपराध प्रवृत्ति का विकास \Rightarrow

व्यवास का चुनाव \Rightarrow

2) वंशानुक्रम HEREDITY: -

कि जैसे माता-पिता होते हैं वैसे उनके सन्तान होते हैं इसका अभिप्राय है कि बालक रंग रूप विद्वता आदि में माता पिता से मिलता है उसे अपने माता पिता के शारीरिक व मानसिक गुण प्राप्त होते हैं उदाहरण हेतु यदि माता-पिता विद्वान् होता है पर यह भी देखा जाता है कि विद्वान् माता पिता के बालक को न केवल इस कारण यह है की बालक को न केवल अपने माता-पिता से बल्कि अपने पूर्वजों से अनेक मानसिक व शारीरिक गुण प्राप्त होते हैं।

वंशानुक्रम के परिभाषा :-

D.N. JHA के अनुसार वंशानुक्रम व्यक्ति के जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग्य है।

Wood Worth के अनुसार :-

वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती हैं जो जीवन का आरम्भ करते समय जन्म के समय नहीं वरन् गर्भाधान के समय जन्म से लगभग नौ माह पूर्व व्यक्ति में उपस्थित थी।

RUDH BENDICT स्वयं वैडिक के अनुसार :-

माता पिता से सन्तान को प्राप्त करने वाले गुणों का नाम है।

जेमस ड्रेवर के अनुसार :-

माता पिता के शारीरिक व मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में हस्तान्तरण होना वंशानुक्रम है।

H.A. PETERSON रच. रूठ. पिटरसन :- व्यक्ति को अपने माता पिता से पुंजी की जो विशेषताएँ प्राप्त हैं उसे वंशानुक्रम कहते हैं।

वंशानुक्रम का व्यक्ति पर प्रभाव :-

पश्चात् मनोवैज्ञानिक ने वंशानुक्रम के महत्व के सम्बन्ध में अनेक अध्ययन व. परिष्करण किये हैं इसके आधार पर उन्होंने सिद्ध किया है कि बालक के व्यक्तित्व के अनेक पहलु पर वंशानुक्रम का प्रभाव पड़ता है। हम यहाँ कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिक के आधार पर अध्ययन कर रहे हैं।

मुल शक्तियों पर प्रभाव :-

THORNDIKE के अनुसार :-
"बालक के मुल शक्तियों का प्रधान कारण उसका वंशानुक्रम है।"

शारीरिक लक्षणों पर प्रभाव :-

KARL PEARSON का मत है, यदि माता पिता की लम्बाई कम या अधिक होती है तो उनके बच्चे की लम्बाई भी कम या होती है।"

प्रजाति श्रेष्ठता पर प्रभाव :- KLINBENRUG का

मत है कि बुद्धि के श्रेष्ठता का कारण प्रजाति है यही कारण है अमेरिका की श्वेत प्रजाति निम्न प्रजाति से श्रेष्ठ होते हैं।

समाजिक स्थिति पर प्रभाव:-

कि गुडवान स्वं प्रतिष्ठित माता WINSHIP पिता की सन्तान प्रतिष्ठा प्रदान करती है वह इस निष्कर्ष पर RICHARD EDWARD के परिवार का अध्ययन करने के बाद पहुँचे RICHARD स्वं गुणवान स्वं प्रतिष्ठित मनुष्य था स्वं उसने श्लिजावेधन नामक जिस स्त्री से विवाह किया था वह भी उसी के समान थी इन दोनों के वंशजों का विधान सभा के सदस्यो, महा-विद्यालय के अध्यापको आदि के प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुये उनका स्वं वंश अमेरिका का राष्ट्रपति बना।

बुद्धि पर प्रभाव :- Goddard का मत है कि मन्द बुद्धि माता-पिता की संतान मन्द बुद्धि वाले होते हैं और तीव्र बुद्धि वाली सन्तान तीव्र बुद्धि वाली होती है कालिका नामक एक सैनिक के वंशजों का अध्ययन करके किया। कालिका ने पहले एक मन्द बुद्धि स्त्री से और कुछ समय के बाद एक तीव्र बुद्धि की स्त्री से विवाह किया। पहली स्त्री के 480 वंशजों में से 143 मन्द बुद्धि 46 सामान्य 364 अवैध संतान 32 वैधाय 24 शराबी 8 वैश्यालय स्वामी 3 मिर्गी और 3 अपराधी दूसरी स्त्री जो तीव्र बुद्धि की थी 496 वंशजों में से केवल 3 मन्द बुद्धि और चरित्रहीन था शेष ने व्यवसायो शिक्षको, डॉक्टरों वकीलो आदि के रूप में समाज में समानित स्थान प्राप्त किया।

वातावरण के लिए पर्यावरण शब्द का भी प्रयोग किया जा सकता है। पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है परि + धन आवरण जिसमें परि का अर्थ चारों ओर और आवरण का अर्थ ढकने वाला होता है इत्य

प्रकार पर्यावरण या वातावरण वह वस्तु है जो चारों ओर से हमें घेरता है या घेरे हुए है। अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के चारों ओर जो कुछ है वह उसका वातावरण है। हम वातावरण के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं।

i) Langfield के अनुसार, पितापिता के असाव व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले वस्तु वातावरण है।

The environment is everything that affected the individual except his genes.

ii) Woodward के अनुसार, वातावरण में वे सब बाह्य तत्व आ जाते हैं जिन-द्वारे व्यक्ति को जीवन आरम्भ करने के समय से प्रभावित किया है।

iii) Garbunt के अनुसार, वातावरण वह है वस्तु है जो किसी अन्य वस्तु को घेरे हुए है और उस पर सीधे अपना प्रभाव डालती है।

iv) Ross के अनुसार, वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।

वातावरण का प्रभाव ! —

- i) शारीरिक अन्तर पर प्रभाव
- ii) मानसिक विकास पर प्रभाव
- iii) बुद्धि पर प्रभाव
- iv) व्यक्तित्व पर प्रभाव
- v) वासक के बहुमुखी प्रभाव
- vi) अनाथ बच्चों पर प्रभाव
- vii) प्रजाति के श्रेष्ठता पर प्रभाव
- viii) जुड़वा बच्चों पर प्रभाव

Rojgauralent.com